सोल टॉक-2025

City भास्कर
रांची, शुक्रवार 18 जुलाई, 2025
6

जज्बा • आईआईएम में इस सत्र एडमिशन लिए उन दिव्यांग स्टूडेंट्स की कहानी, जिन्होंने अपनी कमी को खूबी बना सफलता पाई

एक्सीडेंट में जावेद के एक हाथ-पैर कटे... रेलवे से क्रिकेट खेला; रिवर राफ्टिंग, पैराग्लाइडिंग में हैं अव्वल

कुंदन कुमार चौधरी | रांची

महान वैज्ञानिक थॉमस एडिसन ने कहा है, 'हमारी सबसे बड़ी कमजोरी हार मान लेना है, सफल होने का सबसे निश्चित तरीका है हमेशा एक और बार प्रयास करना।' हम अपने आसपास कई ऐसे लोगों को देखते हैं, जो प्रतिकूलता के सामने झुकते नहीं और अपनी कमियों को सक्सेस की सीढ़ी बना लेता हैं। देश के प्रतिष्ठित संस्थान आईआईएम (भारतीय प्रबंधन संस्थान) में प्रवेश पाना बहुत प्रतिस्पर्धी है और इसके लिए छात्रों को कॉमन एडमिशन टेस्ट (CAT) परीक्षा उत्तीर्ण करनी होती है। 2025-27 सत्र में रांची में 48 स्टूडेंट्स डीएपी यानी डिफरेंटली एबल्ड पर्सन (दिव्यांग) का एडमिशन लिया गया है। इन 48 स्टूडेंट्स में 47 एमबीए व एक एमबी-बीए के छात्र हैं। डीएपी में 42 लड़के व 6 लड़कियां हैं। इस बार रांची आईआईएम में एडमिशन लिए 5 ऐसे छात्रों की कहानी जो दिव्यांग होते हुए भी अपने जज्बे से कमियों को हराकर मैनेजमेंट की पढ़ाई कर रहे हैं व आगे सफलता की सीढ़ी चढ़ने को तत्पर हैं।

बाएं से अभिषेक, विनायक, नरसिम्हन और आदेश।

अभिषेक अयंगर : एवरेस्ट-सा हौसला

हमारा परिवार तमिलनाडु का रहने वाला है, लेकिन मेरा जन्म मुंबई में हुआ। मां मल्लिका 37 साल की थीं, तो मैं होने वाला था। डॉक्टर जन्म से पहले ही बोले कि मेरा शरीर डेवलप नहीं कर रहा है। हड्डियां सही नहीं हैं, लेकिन पिता विजय अयंगर व मां ने मुझे दुनिया में लाने का फैसला किया। मुझे बेस्ट परवरिश मिली। बचपन में कराटे सीखी। नॉर्मल स्कूल में पढ़ाई की। एकाउंटिंग-फाइनेंस से ग्रेजुएशन किया। 3 फीट का ही हूं, लेकिन एमबीए करके फाइनेंस की दुनिया में पहचान बनानी है।

जावेद खान : हाथ-पैर कटे तो जयपुर फुट लगा खेलने लगे क्रिकेट

1991 में जब मैं 10 साल का था, तो ट्रेन एक्सीडेंट में मेरा दायां हाथ और दायां पैर कट गया। मैं बेहोश गया। जब मैंने आंखें खोलीं तो मां सलमा स्माइल कर बोलीं-कुछ नहीं हुआ। 2 महीने घर में रहा, फिर जयपुर फुट लगाया और चलने की प्रैक्टिस करने लगा। मैं क्रिकेट खेलने लगा। रेलवे के हैंडीकैप टीम संग खेला। जिम करता हूं, राफ्टिंग किया। पैराग्लाइडिंग में आगे हूं। मुंबई से मास्टर की पढ़ाई की। नौकरी भी की। लेकिन, कुछ अच्छा करना चाहता था, इसलिए आईआईएम आया हूं।

विनायक राजशेखर : सुनने में प्रॉब्लम हुई तो मशीन बनी सहारा

मैं ओडिशा के जयपुर का रहने वाला हूं। पिता दंडेश्वर राव बिजनेसमैन हैं मां मणि होममेकर। प्लस टू की पढ़ाई तक मैं ठीक था। ग्रेजुएशन के समय मुझे प्रॉब्लम शुरू हुई, मुझे बोलने-सुनने में समस्या आने लगी। फिर घरवाले मेरा इलाज कराने लगे। धीरे-धीरे मैं बातें करने लगा। सुनने के लिए हायर फ्रीक्वेंसी मशीन से सुन भी लेता हूं। फिर से पढ़ाई शुरू की। कैट क्लियर किया। अब आगे बड़ी कंपनी में काम करना है।

नरसिम्हन जयराम : स्पाइनल कॉर्ड के प्रॉब्लम को पीछे छोड़ा

हैदराबाद का हूं। पिता नरसिम्हन राव तेलंगाना में सरकारी कर्मी हैं व मां अनुराधा होममेकर। जब मैं जन्म लिया तो मेरा दायां पैर उल्टा था। सर्जरी के बाद थोड़ा ठीक हुआ। एमआरआई हुई तो पता चला कि मेरे ब्रेन व स्पाइनल कॉर्ड में प्रॉब्लम है। आज भी मेरे पैरों में सेंसेशन प्रॉब्लम है, लेकिन पढ़ाई नहीं छोड़ी। बीकॉम किया। फिल्मों रुचि रही। शॉर्ट तेलुगु फिल्में बनाईं। अब अच्छी कंपनी में मैनेजर बनना है।

आदेश गोडके : पैर खराब होने से घर पर रहा, हिंदुस्तानी म्यूजिक सीखा

मैं महाराष्ट्र के बारामती का रहने वाला हूं। पिता उमेश गोडके ज्वेलरी शॉप में काम करते हैं। तीसरी कक्षा में था तो दाएं पैर में कैल्शियम की कमी के कारण सेंसेशन नहीं होने लगा। एक साल तक घर पर ही रहा। उसी दौरान हिंदुस्तानी क्लासिकल म्यूजिक सीखा, अब विशारद बनूंगा। पुणे से बीकॉम किया। एमबीए कर अच्छी कंपनी में काम करना है।

जावेद खान

Dainik Bhaskar_18.07.2025_P. 6